(SJIF) Impact Factor-7.675

ISSN-2278-9308

B.Aadhar

Peer-Reviewed Indexed

Multidisciplinary International Research Journal

May -2020

SPECIAL ISSUE- CCXXXIII (233)

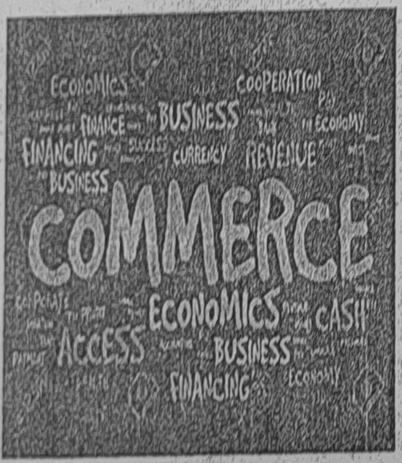

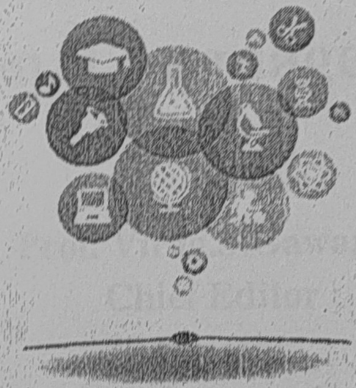

Chief Editor
Prof. Virag S. Gawande
Director
Aadhar Social
Research & Development
Training Institute Amravati

Editor:
Dr.Dinesh W.Nichit
Principal
Sant Gadge Maharaj
Art's Comm,Sci Collage,
Walgaon.Dist. Amravati.

Executive Editor :
Dr.Sanjay J. Kothari
Head, Deptt. of Economics,
G.S.Tompe ArtsComm,Sci Collage
Chandur Bazar Dist. Amravati

The Journal is indexed in:

Scientific Journal Impact Factor (SJIF)

Cosmos Impact Factor (CIF)

International Impact Factor Services (IIFS)

Scanned with ACE Scanner

B.Aadhar' International Multidisciplinary Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675,
Special Issue
ISSN : 2278-9308
May 2020

45	पर्यावरण संरक्षण और चिपको आन्दोलन Dr.Anju A.Sharan	187
46	मजदूर की मजबुरी डॉ सचिन होले	193
46	पर्यावरण संतुलनात महिलांचा सहभाग प्रा.डॉ. मंदाकिनी मेश्राम	195
47	कोसला –एक आकलन अन्वयार्थ डॉ.राजेश मिरगे	198
48	Information on globalization and employment in India **Dr.Sanjay J. Kothari**	200
49	वाणिज्य शाखेत मराठी भाषाभ्यासाची उपयुक्तता प्रा.नरेश महाजन	209
50	मराठी भाषा आणि व्यावसायिक संधी प्रा.डॉ.ममता व.दयने	212
51	मराठी साहित्य आणि मानवतावाद डॉ.सविता माधवराव पवार	215
52	म. गांधींची ग्राम विकासाची संकल्पना प्रा. पराग ज. गावंडे	220
53	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांचे शैक्षणिक विचार **डॉ. प्रशांत सुखदेवराव चऱ्हाटे**	224
54	हिंदी कविता में गांधी का यशोगान एवं मृत्यु का करूण वर्णन **डॉ. रवींद्रकुमार शिरसाट**	227
55	State & Challenges of Agriculture Finance in India **Dr. Dattatray Nivruttirao Ghodake**	231
56	An Evaluative Approach of the Expedition for Self Identity in Woman Self in The Dark Holds No Terror **Dr Veena Radheshyam Ilame**	239
57	मराठीतील अस्तित्ववादी आणि मिथ्यावादी रंगभूमी प्रा. डॉ. भूमिका गो. वानखडे	246
58	अध्यापक विद्यालयातील प्रशिक्षणार्थ्यांच्या नकाशा विषयक कौशल्याच्या विकास डॉ. अविनाश देशकर	249
59	मोताळा तालुक्यातील हेंमाडपंथी महादेव मंदिर : एक चिकित्सक अध्ययन डॉ. किशोर मारोती वानखडे	257
60	पी. व्ही. नरसिंहराव भारताचे विकासपुरुष'': एक चिकित्सक अध्ययन डॉ. सुभाष दौलतराव उपाते	263
61	रेणु की कहानियों में ग्रामीण जीवन डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे	266
62	User Study Of Ayrvedic Medical College Libraries In Western Maharashtra **Mr. Chavan Raghunath Ramchandra,**	269

Scanned with ACE Scanner

B.Aadhar' International Multidisciplinary Research Journal
Impact Factor - ((SJIF) -7.675,
Special Issue
ISSN : 2278-9308
May 2020

रेणु की कहानियों में ग्रामीण जीवन

डॉ. शिवाजी नागोबा भदरगे
सहायक प्राध्यापक एवं हिन्दी विभाग प्रप्रमुख हुतात्मा जयवंतराव पाटील महाविद्यालय,
हिमायतनगर जिला नांदेड़-431802

रेणु की रचनाओं के प्राण तत्व गांव और उसके निवासी है। क्योंकि उनकी मुख्य मान्यता थी कि, भविष्य में भारत की बौद्धिक चेतना के विकास की संभावना इन्हीं गांवों पे छुपी हुई है। साहित्य में कल्पना को बढ़से रोकना है। इस बात की उन्हें चिंता थी। गांव के जीवन की सच्चाई को उन्होंने अपने कथात्मक शैली में विकसित किया। रेणु जी की निगाहें भारत के गांव पर थी। यथार्थ के नाम पर किसी आदर्श को सम्मानित करने का लोभ उन्हें कभी भी नहीं जड़ सका। दर्पण में चेहरे की तरह उनके भावना के प्रतिछबी प्रस्तापिथ हुई है। समीक्षकों ने आंचलिक शैली के नाम से परिचित कराया। लेकिन वास्तवत: वे इसी शैली से प्रतिबद्ध नहीं हो सके। रेनू जी की चाहे कहानियां हो उपन्यास हो सभी में ग्रामीण दृष्टि की सूक्ष्म निरीक्षण शैली प्रतिबिंबित होती है। आज के आलोचक जबरन उसकी शैली ली को परंपरा के सूत्र में प्रेमचंद में तलाशने की हिमाकत करते हैं। यह संभावित नहीं है। वस्तुः रेणु की परंपरा रेणु से ही आरंभ होती है और रेणु से ही समाप्त होती है। उनकी शैली का प्रॉपर संबंध किसी में ढूंढना उनके साथ बेमानी होगी। रेणु की रचनाओं में ग्राम बोध का विशिष्ट मूल्य प्रविष्ट होता है। वह किसी पुर्ववर्ती या परवृर्ती रचनाकारों में नहीं मिलता है।

जहां तक रेणु के कथा पात्रों की बात है वह किसी एक दृष्टि के हिमायती नहीं बन पाए हैं, कहीं भी। क्योंकि गांव में एक दृष्टि का ठहराव कहीं मिलता भी नहीं। यही कारण है कि, सभी माननीय व्यवस्थाओं या जटिलताओं को किसी एक पत्र में तलाश पाना कठिन प्रक्रिया तो है ही मानवीय, अमनोवैज्ञानिक भी है। रेणु के गांव के पात्र किसी नजरिया से समाज में जीने के अभ्यस्त नहीं है और नहीं भी किसी खास किस्म के जीवन मूल्यों में आपात मस्तक स्नेह रहने के लायक है। तीसरी कसम में हीरामन और हीराबाई के अंतर संबंधों में परंपरागत मिठास की जगह पर प्रेम के सात्विक किंतु गहरे भावबोध कीं मिसाल कहानी है। कहानी को नए जीवन सत्यों के द्वार तक पहुंचा देती है। "हीरामन का जी जुड़ गया। हीराबाई ने अपने हाथ से उनका पत्तल बिछा दिया। पानी छींट दिया। जुड़ा निकाल दिया। इस! धन्न! धन्न है। हीरामन ने देखा भगवती मैया भोग लगा रही है। लाल होठों पर गोरस का परस ...पहाड़ी तोते को दूध भात खाते देखा है।"

रेणु के गांव में लोगों की चाहत के कहीं परिदृश्य नजर आते हैं। जिसमें से एक है उसकी शहरी कल्पना। शहर में बढ़ती वैज्ञानिक रंगत से वे अप्रभावित नहीं है। देहाती होने से बचाने की भरसक कोशिश रेणु की बनी रहती है। अपने मानसिक दबाव को जब वे पात्रों में अवतरित करने लगते हैं तब उनके पात्र किसी आकांक्षाओं से लग जाते हैं। लाल पान की बेगम कहानी में रेणु की वार्तालाप शैली अतिरिक्त अभिव्यंजना का आधार बन गई है। यह अतिरिक्त अभिव्यंजना है। पात्र के माध्यम से गांव के वातावरण का चित्रण। वातावरण के बीच पात्र चित्रण की पुरानी परंपरा को त्यागकर पात्र के बीच वातावरण की कल्पना की सार्थक अभिव्यक्ति की बहल नेये कथादर्शन का बीजारोपण करती है। रेणु की यह अनूठी पहचान अन्यत्र दुर्लभ है। ऐसा अनेक स्थलों पर पात्रों में समाज के संबंधों में फंसे पात्रों के बाहर निकालने की छटपटाहट और बेचैनी दृष्टिगोचर होती है। वातावरण उनकी असहज आकांक्षा के बीच दब जाती है। लाल पान की बेगम इसका स्वस्थ प्रमाण है। "अच्छा अब एक बैसकोप का गीत गा तो चंपिया! डरती है काहे? का है जहां भूल जाओगी, बगल में तो मास्टरनी बैठी ही है।"

Scanned with ACE Scanner

गांव के विकास पर व्यंग्य करती कहानी पंचलाइट आधुनिक भारत की वैज्ञानिक प्रगति का उपहास करती है। उपेक्षित गांव में पंचलाइट या गैस बत्ती का होना शहर में बिजली से कम सुकून देने वाला नहीं है। इस कहानी में गोधन के सामाजिक बहिष्कार को जितने सहज और स्वस्थ तरीके से बाहर कर दिया जाता है, उसी से गांव में पंचलाइट के महत्व को समझा जा सकता है। बहिष्कृत गोधन पर आरोप था कि, वह सिनेमा के गीत गा-गा कर मुनरी को आकृष्ट करता है और उस पर डोरे डालता है। जिसकी शिकायत मुंनरी की मां ने की और पंचों ने उसका हुक्का पानी बंद कर दिया। अपराध गंभीर था इसलिए हुक्का पानी खुलना मुश्किल था। परंतु पंच लाइट जलाने की कला गोदन के पास थी और पंचलाइट ना जलाना सारे गांव की इज्जत जाने जैसा था। इसलिए वह गोधन को बुलाया गया उसने पंच लाइट जलाकर गांव की इज्जत बचा ली। फतेह उसका हुक्का पानी फिर खुल गया सरदार ने गोदन को बहुत प्यार से पास बुला कर कहा "तुमने जाति की इज्जत रखी है, तुम्हारा साथ खून माफ। खूब गांव सलीमा का गाना।"शहर की बिजली बत्ती को गांव का व्यक्ति मुहावरे का रूप किस तरह दे देता है इसका प्रमाण है जंगी के पत्तों का व्यंग जब वह कहती है। चल दिदिया चल! इस मोहल्ले में लाल पान की बेगम बस्ती है। नहीं जानती दोपहर दिन और रात बिजली की बत्ती चक्कर जलती है भक भक बिजली बत्ती की बात सुनकर ना जाने क्यों सभी खिलखिला कर हंस पड़ी फुआ की टूटी हुई दंत पत्तियों के बीच से एक मीठी गाली निकली शैतान की नानी।!

रेणु जी गांव के वातावरण को जीवंत बनाने के लिए किसी साधक की तरह गांव की गालियों तक का इस्तेमाल करने में नहीं हिचकिचाते। बात बात में उनके पात्र अपने मन मुताबिक बतियाते हैं और गरियाते हैं, किंतु उसमें उनका प्रेम दुलार सब कुछ एक साथ टपक पड़ता है। जीभ के झाल को गले में उतारकर बिरजू की मां ने :अपनी बेटी चंपिया को आवाज दी- "अरी चंपिया-या-या, आज लौटे तो तेरी मुंडी मरोड़कर चूल्हे में झोंकती हूं। दिन ब दिन हूं दिन दिन बेचैन होती जा हैं। गांव में तो अब टेंडर बैसकोप का गीत गाने वाली पतुरिया-पतेहू सब आने लगी है। कहीं बैठे के 'कहीं बाजे मुरलिया' सीख रही होगी। ह-र-जा-ई-ई। अरी चंपिया-या-या।"

रेणु जी अपनी कहानियों में छोटी-छोटी बातों को जिस हिफाजत और करीने से सजा देते हैं उस तरह कोई भी साहित्यकार सजाने में महारत हासिल नहीं कर पाया, अभी तक। तीर्थोदक कहानी में घर के रहन-सहन, जीवन दर्शन, सामाजिक दृष्टिकोण आदि समस्त उपक्रमों को सधी हुई भाषा शैली में चित्रित कर डालने की कला सिर्फ रेनू जी की अपनी कला कही जा सकती है। लल्लू की मां को बोध बाबू जब समझाते हैं कि, 'पूरक बच्चन काटे जो नारी' तब लल्लू की मां जो जवाब देती है, उसमें संपूर्ण पुरुष समाज के प्रति ललकार छिपी किंतु इसके बावजूद पति के प्रति सम्मान पर प्रश्न चिह्न नहीं लगने दिया है। घर और समाज के मर्यादा पालन की यह अनूठी कला भी सिर्फ रेणु की नारियों के पास मिलेगी। रखिए अपना पुरुख बचना। खूब सुन चुकी हूं पूरुख बच्चन। चालीस साल से और किसका बच्चन सुन रही हूं? कभी बात से बेबात या चाल से कुचाल नहीं चली। तिस पर रोज़ तीन कोड़ी गालियां सास, ससुर और इनकी।

चरित्र को आधार बनाकर समाज में व्यक्ति के संबंधों को विश्लेषण करने की मनोवैज्ञानिक कोशिश हुई इस कहानी में सिरचन चटोर है, मुंहजोर है और किसी की न सहने वाला एक ऐसा कुशल कारीगर है। जिसके गुण उसके सिर पर चढ़कर बोलते हैं। इसलिए किसी को बता नहीं पर हृदय से वह विपन्न नहीं है। मानू के लिए शितलपाटी बनाते बनाते जब वह चाची के डांटने पर हनहनाते अंगन के बाहर निकल गया तो मानू आनमानी हो गयी। सिरचन को मानोगे मानु के अनमनेपन का अंदाजा हो गया था। इसलिए मानू विदा काल में गाड़ी को छूटते चिक, आसनी और शीतलपाटी भेंट करने पहुंच जाता है। गांव में छोटे बड़े का सम्मान संबंध कितना गहरा होता है इसका प्रमाण है रेणु जी की ठेस कहानी।

सारांश

Scanned with ACE Scanner

अंततः यह कहना गलत नहीं होगा कि, रेणु साहित्य गांव की तमाम विसंगतियों की विश्लेषित संस्लेषित करने में सफल है। गांव और शहर के जुड़ते ताल्लुकातों को गति, स्वरूप और दिशा देने में भी वे सफल रहे हैं।द्र प्रसाद पांडे जैसे प्रगतिशील आलोचक उपन्यास मैला आंचल में आंचलिक तत्व मिलते हैं। इस तरह की समीक्षा के जन्मदाता के योगदान को प्रदान करने की पहल का एक अंग होती है। सवाल यह नहीं है कि छायावाद, प्रगतिवाद या आंचलिक जैसे विशेषण के रूपों के साथ कब और क्यों जुड़ जाते हैं। या कब और किन रचना रुपों को देखकर किसी रचना शैली को प्रदान कर दिया जाता है। सवाल है कि, इस तरह के विशेषण किसी खास समय पर ही क्यों जोड़ दिए जाते हैं। इससे पहले या बाद में नहीं। जाहिर है किसी मौलिक चिंतन के धनी रचनाकार के साहित्य में ही खूबी है, जिनके कारण वह किसी विशेषण का हकदार होता है। और रचना की पहचान रेखांकित करने में सक्षम दिखाई देती हैं। तभी कोई विशेषण संपूर्ण विधा या चेतना का परिचय हो पाता है। अन्य तत्वों को ढूंढ ढूंढ कर अपनी रचना में समाविष्ट करके चलता है। उनके आधार पर ही उसकी रचना की जाती है, जो निश्चित ही किसी दूसरे में नहीं मिलती है। रेणु के साहित्यिक तत्व की कसौटी पर यशपाल या प्रेमचंद खरे नहीं उतरते हैं, नागार्जुन या भैरव प्रसाद गुप्त भी खरे नहीं उतरते, सिर्फ खरे उतरेंगे रेणु।

संदर्भ ग्रंथ सूची:

1. फणीश्वर नाथ रेणु; "मैला आंचल" (उपन्यास)
2. डॉ. प्रिया ए.; "फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियों में गांव के चित्र"
3. फणीश्वर नाथ रेणु; "तीसरी कसम" (कहानी संग्रह)
4.. हरीकृष्ण कौल; "फणीश्वर नाथ रेणु की कहानियां: शिल्पा और सार्थकता"

Scanned with ACE Scanner